30

रक्ताद्यर्थक प्रकरण

तद्धित अधिकार में बहुत प्रकार के सूत्र पढ़े गए हैं यह आप जान चुके हैं।उन सूत्रों की अनेक प्रकार के प्रकरणों में व्याख्या है। वह आप लघुसिद्धांतकौमुदी आदि ग्रंथों में देखने के योग्य हैं। यहां तो उनकी व्याख्या के लिए चार पाठ परिकल्पित हैं। पूर्व में दो पाठों में अपत्याधिकार प्रकरणस्थ और मत्वर्थीय प्रकरणस्थ सूत्रों का परिचय प्राप्त किया है। अवशिष्ट प्रकरणस्थ सूत्र के लिए दो पाठ कल्पित हैं। उनमें प्रथम रक्ताद्यर्थक प्रकरण नामक पाठ में अर्थात् इस (तृतीय) पाठ में रक्ताद्यर्थक प्रकरण से यदधिकार प्रकरण तक आलोचना विद्यमान है। तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय, प्रत्ययः, परश्च तद्धितप्रत्यय विधायक सूत्रों में अधिकार किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- सरलता से रक्ताद्यर्थक प्रत्ययों को जान पाने में;
- रक्ताद्यर्थक प्रकरण के सूत्रों के अर्थों को जान पाने में;
- लौकिक अलौकिक विग्रहों को जान पाने में;
- रक्ताद्यर्थक प्रकरण के सूत्रों के उदाहरणों को जान पाने में;
- तद्धितप्रत्यय के प्रयोग विषय में सहजता से जान पाने में;
- सर्वोपरि तद्धितान्त पद का प्रयोग कहाँ और कैसे करना चाहिए यह जान पाने में।

30.1 तेन रक्तं रागात्॥ (४.२.१)

सूत्रार्थ - रज्यते अनेन इस अर्थ में तृतीयान्त रङ्गवाचक समर्थ प्रातिपदिक से परे तद्धितसंज्ञक अण् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। तेन यह तृतीयान्त का अनुकरण करने वाला लुप्त पञ्चम्यन्त है। अर्थात् कषायेण युक्तम् इत्यादि में कषायेण इत्यादि का अनुकरण तेन इसके द्वारा किया जाता है। रक्तम् यह प्रथमैकवचनान्त है, रागात् यह पञ्चम्येकवचनान्त है। प्राग्दीव्यतोऽण् इससे प्राग् यह अनुवर्तित होता है। इस सूत्र में प्रथमोच्चारित सुबन्त पद तेन यह तृतीयान्त है। अतः समर्थ पदों में जो तृतीयान्त पद होता है, वह ही इस अर्थ में विधीयमान प्रत्यय की प्रकृति होगी। रागात् यह प्रातिपदिक होने से इस विशेष्य का विशेषण है। रज्यते अनेन इति रागः अर्थात् जिस द्रव्य से रञ्जन(रंग) होता है, वह राग कहलाता है। यथा नीला, पीला, कषाय आदि रञ्जक द्रव्य राग कहलाता है, इस प्रकार सूत्र अर्थ हुआ -समर्थों के मध्य में जो प्रथम तृतीयान्त समर्थ रागवाची प्रातिपदिक है उससे रक्त इस अर्थ में अण् आदि हो यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

1. **विशेष** - पूर्व अपत्याधिकार प्रकरण में आपने समर्थ विभक्ति षष्टि होती है यह देखा है। रक्तार्थ में तृतीया विभक्ति समर्थ होती है, यह तो अभी जाना हैं। समर्थ विभक्तियों के निर्देश के लिए सूत्रकार प्रायः उन-उन सूत्रों में उस शब्द को प्रयुक्त करता है। यथा प्रथमा के लिए सः, सा, तद्। द्विताया के लिए तम्। तृतीया के लिए तेन। चतुर्थी के लिए तस्मै। पञ्चमी के लिए तस्मात्। षष्ठी के लिए तस्य। सप्तमी के लिए तस्मिन्। सूत्रनिर्दिष्ट विभक्ति के अनुसार प्रातिपदिक में भी वह वह विभक्ति अर्थात् सु-अम्-टा-ङे-ङसि-ङस्-ङि यह विभक्ति होती है। और आवश्यक होने पर द्विवचन अथवा बहुवचन प्रातिपदिक से प्रयोग कर के लौकिक अलौकिक विग्रह आदि करना चाहिए। तत्पश्चात् प्रातिपदिक से तद्धितप्रत्यय विहित होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च इस से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इस से अन्तर्वर्ती विभक्ति का लोप होता है। तत्पश्चात् आदिवृद्धि प्राप्त है चेत् होती है। तत्पश्चात् भसंज्ञक वर्ण का लोप होता है। पुनः एकेदशविकृतन्याय से पूर्व में किया गया प्रातिपदिकत्व अक्षुण्ण होता है यह मानकर स्वादि विभक्ति होती है। तत्पश्चात् एकवचन विवक्षा में सुप्रत्यय होने पर प्रथमान्तरूप दर्शाया गया है। प्रत्ययों में प्रायः कोई अनुबन्ध होता है। और उसका आदि वृद्धि आदि प्रयोजन भी होता है। पुनः प्रत्यय के स्थान पर कभी आदेश भी विधान किया है यह सब ध्यान योग्य है।

   उदाहरणम् - कषायेण रक्तं वस्त्रं काषायणम्। कषायेण रक्तम् इस अर्थ में कषाय टा इस रागवाचक तृतीयान्त सुबन्त से प्रकृत सूत्र से अण्प्रत्यय और अनुबन्धलोप होने पर कषाय टा अ यह होने पर समुदाय की तद्धितान्त होने के कारण कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुपो धातुप्रातिपदिकयोः इस सूत्र से सुप् (टा-विभक्ति) का लोप होकर कषाय अ यह होने पर अणः णित्त्वात् तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदि वृद्धि होने पर काषाय अ यह हुआ। तत्पश्चात् यचि भम् इस सूत्र से भसंज्ञक होने से यस्येति च इस से उसका (भसंज्ञक) लोप होने पर काषाय् अ इस स्थिति में एकदेशविकृत न्याय से प्रातिपदिक

टिप्पणियाँ

होने के कारण सु-विभक्ति में (वस्त्रम् इस के विशेष्यानुसार) नपुंसकलिङ्ग होने से सु को अम् आदेश और पूर्वरूपैकादेश अकार होने पर काषायम् यह रूप सिद्ध होता है। पुंल्लिङ्ग में काषायः, स्त्रीलिङ्ग में काषायी यह रूप होता है। इस प्रकार ही माञ्जिष्ठम्, माञ्जिष्ठः, माञ्जिष्ठी इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

30.2 नक्षत्रेण युक्तः कालः॥ (४.२.३)

सूत्रार्थ – नक्षत्रवाचक तृतीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से तेन युक्तम् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक अण्प्रत्यय होता है नक्षत्रयुक्तकालार्थ गम्यमान होने पर।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। नक्षत्रेण यह तृतीयान्तानुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त पद है। अर्थात् पुष्येण युक्तः इत्यादि में पुष्येण इत्यादि का अनुकरण नक्षत्रेण इस के द्वारा किया जाता है। युक्तः, कालः यह दोनों भी प्रथमैकवचनान्त है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस सूत्र से अण् यह अनुवर्तित होता है। तेन रक्तं रागात् यहाँ से तेन यह पद अनुवर्तित होता है।, और वह लुप्तपञ्चम्यन्त तृतीयान्त का अनुकरण है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये सब अधिकार करते हैं। प्रत्ययः इसका विशेषण है तद्धितः, परः यह। अतः सूत्र से जो प्रत्यय विधान किया जाता है, वह तद्धितसंज्ञक और पर होता है। तद्धितप्रत्यय प्रातिपदिक से विधान किया जाता है यह स्मरण रखना चाहिए। प्रातिपदिक का विशेषण समर्थं यह है। सूत्र में नक्षत्र शब्द से नक्षत्र युक्त चन्द्रमा का बोध होता है। इस प्रकार नक्षत्र वाचक तृतीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से तेन युक्तम् इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक अण्प्रत्यय बाद में होता है, नक्षत्रयुक्तकाल अर्थ गम्यमान होने पर।यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरणम् – पुष्येण युक्तम् अहः, पौषम् अहः। पुष्येण युक्तः कालः इस अर्थ में पुष्य टा इस तृतीयान्त नक्षत्रवाचक सुबन्त से प्रकृतसूत्र से अण् प्रत्यय, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लोप, आदिवृद्धि, भसंज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से अकारलोप होने पर पौष्य् अ इस स्थिति में तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यलोप इति वाच्यम् इस से यकारलोप होने पर अहः। विशेष्य के अनुसार नपुंसकलिङ्ग में स्वादिकार्य होने पर पौषम् यह रूप सिद्ध होता है।स्त्रीलिङ्ग में पौषी रात्रिः यह प्रयोग है।

30.3 दृष्टं साम॥ (४.२.७)

सूत्रार्थः – दृष्टं साम अर्थात् ज्ञानरूपतया प्राप्तं साम इस अर्थ में तृतीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक अण्प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है।इस सूत्र में दो पद है। दृष्टं साम यह दोनों भी प्रथमैकवचनान्त पद है। तेन रक्तं रागात् यहाँ से तेन यह पद अनुवर्तित होता है। और वह तृतीयान्त का अनुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त पद है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस से अण् यह अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय इति एते अधिक्रियन्ते। तेन पूर्व में कहा गया सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरणम् – वसिष्ठेन दृष्टं साम वासिष्ठं साम। वसिष्ठेन दृष्टमिति लौकिक विग्रह होने पर वसिष्ठ टा इस तृतीयान्त सुबन्त से दृष्टं साम इस प्रकृतसूत्र से अण् प्रत्यय, तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् लोप, आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप होने पर वासिष्ठ इस स्थिति में एकदेशविकृतन्याय से प्रातिपदिक होने के कारण स्वादि कार्य होकर वासिष्ठम् यह सिद्ध होता है। साम इस विशेष्य के अनुसार नपुंसकलिङ्ग में यह प्रयोग है। इस प्रकार ही विश्वामित्रेण दृष्टं वैश्वामित्रं साम इत्यादि रूप सिद्ध होता है।

30.4 सास्य देवता॥ (४.२.२४)

सूत्रार्थ – देवता विशेष वाचक प्रथमान्त समर्थ प्रातिपदिक से अस्य इस अर्थ में तद्धित अण् प्रत्यय हो।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। सूत्र में तीन पद हैं। सा यह प्रथमान्त का अनुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त है, अस्य यह षष्ठी एवचनान्त है, देवता यह प्रथमा एकवचनान्त है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस सूत्र से अण् यह अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय ये अधिकार करते हैं। यज्ञादि में जिसको उद्देश्य करके हवि प्रदान की जाती है, वह देवता है। अथवा मन्त्रादि में जिसकी स्तुति अथवा प्रतिपादन होता है, वह देवता कहलाता है। इस प्रकार सा अस्य देवता अर्थ में देवतावाचक प्रथमान्त समर्थ प्रातिपदिक से अण्प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्– इन्द्रो देवता अस्येति ऐन्द्रं हविः। इन्द्रो देवता अस्य यह लौकिक विग्रह करने पर इन्द्र सु इस प्रथमान्त सुबन्त से सास्य देवता इस के योग से अण् प्रत्यय, सुब्लोप आदिवृद्धि, ऐकारादेश, भसंज्ञक अकार का लोप होने पर ऐन्द्र्अ इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर ऐन्द्र यह हुआ। तत्पश्चात् हविः इस विशेष्य के नपुंसकलिङ्ग अनुसार यहाँ भी नपुंसकलिङ्ग होने से सुप्रत्यय होने पर सु को अम् आदेश होकर पूर्वरूपैकादेश होने पर ऐन्द्रम् यह नपुंसकपद का प्रयोग है।

इस प्रकार ही पशुपतिः देवता अस्य इस अर्थ में पाशुपतम् इत्यादि पद प्रयोग है।

30.5 ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्॥ (४.२.४३)

सूत्रार्थः – षष्ठ्यन्त समर्थ ग्राम प्रातिपदिक जन प्रातिपदिक और बन्धु प्रातिपदिक से समूह अर्थ में तद्धितसंज्ञक तल्प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। ग्रामजनबन्धुभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त है, तल् यह प्रथमा एकवचनान्त है। ग्रामश्च जनश्च बन्धुश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वो ग्रामजनबन्धवः तेभ्यः ग्रामजनबन्धुभ्यः। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय इति एते अधिक्रियन्ते। तस्य समूहः इसका अनुवर्तन होता है। इस प्रकार पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है। तल् का लकार इत्संज्ञक है अतः त मात्र शेष रहता है। लिङ्गानुशासनात् तलन्तं स्त्रियाम् इस सूत्र से सू तल्प्रत्ययान्त शब्द का स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग होता है। अतः तल्प्रत्यय से परे स्त्रीबोधक टाप् प्रत्यय होता है,यह जानना चाहिए।

टिप्पणियाँ

उदाहरणम् – जनानां समूहः जनता। जनानां समूहः इस लौकिक विग्रह में जन आम् इति षष्ठयन्त सुबन्त से प्रकृतसूत्र से तल्प्रत्यय, अनुबन्धलोप,प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लोप होने पर जनत इस स्थिति में तलन्त होने स स्त्रीलिङ्ग में अजाद्यतष्टाप् इस सूत्र से टाप्, अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ होने पर जनता यह हुआ। तत्पश्चात् सु प्रत्यय होकर सु का हल्ङ्यादिलोप होने पर जनता यह रूप सिद्ध हुआ। इस प्रकार ही ग्रामाणां समूहः इति ग्रामता, बन्धूनां समूहः बन्धुता इत्यादि सिद्ध होते है।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. तेन रक्तं रागात् इस का क्या अर्थ है?
2. काषायी इत्यत्र कौन सा तद्धितप्रत्यय है?
3. वासिष्ठम् शब्द का क्या अर्थ है?
4. पौषम् यहाँ कौन सा तद्धितप्रत्यय है?
5. जनता यहाँ कौन सा तद्धितप्रत्यय है?
6. जनता शब्द का क्या अर्थ है?
7. ऐन्द्रम् यहाँ अण्प्रत्यय किससे होता है ?

30.6 तदधीते तद्वेद॥ (४.२.५९)

सूत्रार्थः – तद् अधीते अथवा तद् जानाति इस अर्थ में द्वितीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से अण्प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में चार पद है। तद् यह द्वितीयान्त अनुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त पद है, अधीते यह तिङन्त क्रियापद है। तद् इति द्वितीयान्त अनुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त है, वेद यह तिङन्त क्रियापद है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस से अण् यह अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये एते अधिक्रियन्ते। प्रातिपदिकात् यह विशेष्य है अतः उसके साथ अन्वयार्थ द्वितीयान्त तद्शब्द का पञ्चम्यन्त के रूप से विपरिणाम किया जाता है। तद् शब्द से समर्थविभक्ति द्वितीया का बोध होता है। इस प्रकार पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है। यहाँ जो अध्येता है वह ज्ञाता भी हो यह नियम नहीं है अन्यथा तदधीते वेद यह सूत्र का स्वरूप होता। सूत्र का आशय तब – जो पढ़ता है अथवा जो जानता है उसके समान कर्मीभूत शब्द से प्रत्यय होता है। तत्पश्चात् पठितुः अथवा ज्ञातुः बोध होता है।

उदाहरणम् – व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन शब्दा इति व्याकरणम्। व्याकरणम् अधीते वेद वा इस लौकिक विग्रह में व्याकरण अम् इस द्वितीयान्त सुबन्त से प्रकृत सूत्र से अण्, प्रातिपदिकसंज्ञा,

सुप् का लोप होकर व्याकरण अ यह हुआ। ततः तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से वृद्धि प्राप्त होने पर न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् इस सूत्र से निषेध होने पर यकार से पूर्व ऐकार आगम होने पर व् ऐ याकरण अ इस स्थिति में भसंज्ञक अकार का लोप होने कर वर्णसम्मेलन होने पर वैयाकरण यह हुआ। तत्पश्चात् सुप्रत्यय,रुत्व,विसर्गादि कार्य होने पर वैयाकरणः यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार छन्दोऽधीते वेद वा छान्दसः इत्यादि रूप सिद्ध होता है।

30.7 क्रमादिभ्यो वुन्॥ (४.२.६१)

सूत्रार्थः – क्रमादिगण में पठित द्वितीयान्त समर्थ प्रातिपदिकों से अधीते अथवा जानाति इस अर्थ में तद्धितसंज्ञक वुन् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। क्रमः आदिर्येषां ते क्रमादयः यह तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिसमास है, तेभ्यः क्रमादिभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त है, वुन् यह प्रथमा एकवचनान्त विधीयमान है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस सूत्र से अण् यह अनुवर्तित हुआ है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिक्रियन्ते। तदधीते तद्वेद यह सूत्र भी अनुवर्तित होता है इस प्रकार उक्तार्थ सम्पादित होता है। वुन् का नकार इत्संज्ञक है, उससे वु यह ही त शेष रहता है। नितः प्रयोजनं ञ्निन्त्यादिर्नित्यम् इस सूत्र से आदि उदात्त का विधान है। युवोरनाकौ इस सूत्र से वु इसका अक यह आदेशो होता है। क्रमादिगण में क्रम, पद, शिक्षा, मीमांसा ये शब्द पढ़े गए हैं।

उदाहरणम् – क्रमकः। क्रमम् अधीते क्रमं वेद वा इति लौकिक विग्रह में क्रम अम् इस द्वितीयान्त सुबन्त से क्रमादिभ्यो वुन् इस सूत्र से वुन् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, उसके स्थान पर युवोरनाकौ इस सूत्र से अक आदेश होने पर क्रम अक इस स्थिति में भसंज्ञा होकर यस्येति च इस सूत्र से मकारोत्तरवर्ती अकार का लोप, वर्णसम्मेलन, स्वादि कार्य करने पर क्रमकः यह सिद्ध होता है। इस प्रकार पदम् अधीते पदं वेद वा इस अर्थ में पदकः, शिक्षाम् अधीते शिक्षां वेद वा इस अर्थ में शिक्षकः, मीमांसाम् अधीते मीमांसां वेद वा इस अर्थ में मीमांसकः यह रूप सिद्ध होता है।

30.8 तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि॥ (४.२.६७)

सूत्रार्थः – प्रकृतिप्रत्ययाभ्यां यदि देशस्य नाम सम्पद्यते तर्हि स अस्मिन् देशे अस्ति इत्यर्थे प्रथमान्तात् समर्थप्रातिपदिकात् अण्प्रत्ययो भवति।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। तस्य नाम तन्नाम, तस्मिन् तन्नाम्नि यह सप्तमी एकवचनान्त है। तद् प्रथमान्त का अनुकरण लुप्तपञ्चम्यन्त है। अस्मिन्, देशे यह दोनों भी सप्तमी एकवचनान्त है, अस्ति क्रिया पद है, इति अव्ययपद है, अतः यह सूत्र अनेक पदों वाला है। प्राग्दीव्यतोऽण् इस से अण् अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथम द्वितीय इति एते अधिक्रियन्ते। और इस प्रकार पहले कहा गया अर्थ ही सिद्ध होता है। प्रथम तत् पद प्रथमा विभक्ति का सूचक है। द्वितीय तत् पद प्रत्ययान्त का सूचक है। इति शब्द विवक्षार्थक है। सूत्र का तात्पर्य तावत् जिस शब्द से अण्प्रत्यय होता है वह अण्प्रत्ययान्त शब्द किसी भी देश की संज्ञा

टिप्पणियाँ

हो। इस प्रकार से अस्मिन् देशे अस्ति इस अर्थ में प्रथमान्त समर्थप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक अण्प्रत्यय होता है। यदि वह प्रत्ययान्त शब्द किसी भी प्रसिद्ध देश का नाम होता है। यह सूत्र मतुप् प्रत्यय का अपवाद है।

उदाहरणम् – उदुम्बराः सन्ति अस्मिन् देशे इस लौकिक विग्रह में उदुम्बर जस् इति प्रथमान्त समर्थ सुबन्त से तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि इस सूत्र से अण्प्रत्यय, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लोप होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदि अच् को वृद्धि औकार आदेश होने और भसंज्ञक अकार का लोप होने पर औदुम्बर् अ इस स्थिति में स्वादि कार्य और वर्णसम्मेलन होने पर औदुम्बरः यह सिद्ध होता है। यह शब्द स्थान विशेष की संज्ञा है। इस प्रकार ही पर्वताः सन्ति अस्मिन् देशे इति पार्वतः देशः इत्यादि रूप सिद्ध होते हैं।

विशेष – पहले कहा सूत्र चातुरार्थिक प्रकरण में है। चार अर्थ हैं, इस कारण चातुरार्थिक प्रकरण कहा जाता है। और वे कौन से हैं–

1. वह इसमें है यह ही देश – इसके विषय में तो कहा ही गया है।
2. उससे निर्मित यह ही नगरी – तेन निर्वृत्तम् (४.२.६८) यह सूत्र है। इसका उदाहरण है– कुशुम्बेन निर्वृत्ता कौशाम्बी।
3. उसका निवास यह ही देश – तस्य निवासः (४.२.६९) इसका योग है। इसका उदाहरण है– शिबीनां निवासो देशः शैबः।
4. जो उससे दूर नहीं है, यह ही देश – अदूरभवश्च (४.२.७०) यह शास्त्र है। अस्योदाहरणम्– विदिशाया अदूरभवं नगरं वैदिशम्।

30.9 लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने॥ (१.२.५१)

सूत्रार्थ – प्रत्यय का लोप होने पर शब्द की प्रकृति के समान ही लिङ्ग और वचन होते हैं।

सूत्रव्याख्या –यह सूत्र अतिदेश सूत्र है। युक्तेन तुल्यं युक्तवत्। व्यक्तिश्च वचनं च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वः व्यक्तिवचने। लुपि यह सप्तमी एकवचनान्त, युक्तवत् यह अव्यय, व्यक्तिवचने यह प्रथमान्त।यह तीन पदों का सूत्र है। इस सूत्र में युक्त शब्द का प्रकृति अर्थ है, व्यक्ति शब्द का लिङ्ग अर्थ है, वचन शब्द का संख्या अर्थ है। सूत्र का आशय– जिसकी प्रकृति से प्रत्यय विहित होता है, उस प्रत्यय का लोप होने पर भी उसकी प्रकृति के अनुसार लिङ्ग और वचन होते हैं, उसके विशेष्य के अनुसार नहीं।

उदाहरणम् – पञ्चालों का निवास जनपद पञ्चालाः। यहाँ जनपद विशेष्य है, प्रकृति है पञ्चालाः, यह प्रथमा बहुवचनान्त और पुंल्लिङ्ग है। पञ्चाल आम् यह लौकिक विग्रह करने पर निवासार्थ और जनपद अर्थ में अण्प्रत्यय का विधान होने पर जनपदे लुप् इस सूत्र से उसका लोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, प्रकृत सूत्र से युक्तवद्भाव अर्थात् प्रकृतिवद्भाव होता है। उससे जनपदः इस विशेष्य के अनुसार लिङ्ग और वचन नहीं होता है, अपितु पञ्चाल इस प्रकृति के अनुसार होता है। उस कारण ही पञ्चालाः यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही कुरवः, अङ्गाः, वङ्गाः कलिङ्गाः इत्यादि सिद्ध होते हैं।

30.10 राष्ट्रावारपाराद्घखौ॥ (४.२.९३)

सूत्रार्थ – अपत्य अर्थ से लेकर चतुर्थी तक के अर्थों से भिन्न अन्य अर्थ शेष है, उस अर्थ में अर्थात् जात आदि अर्थ में राष्ट्र शब्द और अवारपार शब्द से क्रमशः घप्रत्यय और खप्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। राष्ट्रञ्च अवारपारञ्च तयोः समाहारद्वन्द्वः राष्ट्रावारपारम्, तस्मात् राष्ट्रावारपारात् यह पञ्चमी एकवचनान्त है। घश्च खश्च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वो घखौ यह प्रथमा द्विवचनान्त है। शेषे इत्यस्याधिकारः अस्ति। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा इति एते अधिक्रियन्ते। यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से क्रमशः राष्ट्रशब्द से घ प्रत्यय और अवारपार शब्द से ख प्रत्यय होता है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि शैषिकप्रकरणस्थ सूत्रों के द्वारा कहीं प्रकृति का अथवा प्रत्यय का विधान होता है, किसी भी अर्थ का विधान नहीं होता है। जैसै राष्ट्रावारपाराद्घखौ यहाँ प्रकृति और प्रत्यय कहे गए हैं, अर्थ तो अनुक्त है। कहीं पर अर्थ ही उक्त है, प्रकृति और प्रत्यय नहीं। जैसे तत्र भवः, तत्र जातः, तत आगतः इत्यादि अर्थ ही उक्त है न कि प्रकृति और प्रत्यय। अतः वहाँ दोनों सूत्रों के मेलन से ही एकवाक्यता सम्पादित होती है, उससे प्रकृति, प्रत्यय और अर्थों का बोध होता है इस प्रकार तत्र जातः इस अर्थविधायक सूत्र के साथ राष्ट्रावारपाराद्घखौ इस प्रत्यय विधायक सूत्र की एकवाक्यता होने पर सप्तम्यन्त राष्ट्रशब्द से और सप्तम्यन्त अवारपार शब्द से जात अर्थ में क्रमशः तद्धितसंज्ञक घ प्रत्यय और तद्धितसंज्ञक खप्रत्यय होता है।

उदाहरणम् – राष्ट्रे जातादिः यह लौकिक विग्रह होने पर, राष्ट्र ङि इस सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से प्रकृत सूत्र से घ प्रत्यय होने पर प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लोप होने पर राष्ट्र घ यह हुआ। तत्पश्चात् आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से घ् इसके स्थान पर इयादेश होने पर, भसंज्ञक अकार का लोप होने पर, राष्ट्र इय इस स्थिति में वर्णसम्मेलन होने पर राष्ट्रिय इस शब्द से स्वादिकार्य होने पर राष्ट्रियः यह रूप सिद्ध होता है।

अवारं च पारं च अवारपारम् इति समाहारद्वन्द्वः। अवारपारे जातादिः इस अर्थ में अवारपार ङि यह लौकिक विग्रह होने पर प्रकृत सूत्र से ख प्रत्यय होने पर प्रातिपदिक संज्ञा,सुब्लुक्, आयनेयादि सूत्र से ईन आदेश, णत्व, स्वादिकार्य होने पर अवारपारीणः यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. राष्ट्रियः यहाँ कौन सा तद्धित प्रत्यय है?
2. वैयाकरणः इस शब्द का क्या अर्थ है?
3. लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने यह सूत्र अतिदेशसूत्र है अथवा विधिसूत्र?
4. शिक्षक शब्द का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ

5. मीमांसक शब्द का क्या अर्थ है?
6. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि इस सूत्र से कौन सा तद्धित प्रत्यय विधान किया जाता है?
7. वङ्गाः इसका क्या अर्थ है?

30.11 वृद्धाच्छः॥ (४.२.११४)

सूत्रार्थः – वृद्धसंज्ञक समर्थ प्रातिपदिकों से शैषिक अर्थ में तद्धित छ प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। वृद्धात् यह पञ्चमी एकवचनान्त है, छः यह प्रथमा एकवचनान्त है। किसकी वृद्ध संज्ञा होती है, यह पूछने पर यह कहा जाता है – वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् इस सूत्र से जिस शब्द में अचों के मध्य में प्रथम अच् वृद्धिसंज्ञक (आ, ऐ, औ) होता है, वह शब्द वृद्धिसंज्ञक होता है। इस प्रकार अनुवृत्त्यादि कार्य होने पर पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरणम् – शालायां भव यह लौकिक विग्रह होने पर शाला ङि इस अलौकिक विग्रह में वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् इस सूत्र से शाला का आदि अच् के वृद्धिसंज्ञक होने से वृद्धसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् तत्र भवः, तत्र जातः इत्यादि शैषिक अर्थों में शाला ङि इस सप्तम्यन्त समर्थ प्रातिपदिक से वृद्धाच्छ इसके योग से छ् प्रत्यय होने पर आयनेयादि सूत्र से छ् इसके स्थान पर ईय् आदेश होकर भसंज्ञक आकार का लोप, वर्ण सम्मेलन और स्वादिकार्य होने पर शालीयः यह सिद्ध होता है। इस प्रकार ही मालायां जातादि इस अर्थ में मालीयः इत्यादि सिद्ध होता है।

30.12 युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च॥ (४.३.१)

सूत्रार्थः – युष्मद् और अस्मद् शब्द से विकल्प से खञ् प्रत्यय, छ प्रत्यय और अण् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। युष्मत् च अस्मत् च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वे युष्मदस्मदौ, तयोः युष्मदस्मदोः यह पञ्चम्यर्थ में षष्ठी, अन्यतरस्याम् यह सप्तमी एकवचनान्त, खञ् प्रथमा एकवचनान्त हैं। च यह अव्ययपद है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, शेषे इति एते अधिक्रियन्ते। चकार से गर्तोत्तरपदाच्छः इस छः प्रत्यय का समुच्चय किया जाता है। सूत्र में अन्यतरस्यां के ग्रहण से प्राग्दीव्यतीयः सामान्यतया प्राप्तो ऽण् संगृह्यते। यहाँ अस्मद्-युष्मद् यह दो प्रकृतिद है, किन्तु खञ्, छः, अण् ये तीन प्रत्यय हैं। इस प्रकार दोनों प्रकृतियों से तीन प्रत्ययों का विधान होता है प्रत्ययत्रयं। अतः यहाँ यथासंख्यमनुदेशः समानाम् यह परिभाषा प्रवर्तित नहीं होती है, यह स्मरण रखना चाहिए।

उदाहरणम् – युवयोः युष्माकं वा अयं यह लौकिक विग्रह होने पर युष्मद् ओस् अथवा युष्मद् आम् इस अलौकिक विग्रह में युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च इस के योग से छ प्रत्यय, ईयादेश, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, स्वादिकार्य होने पर युष्मदीयः सिद्ध होता है।

छ प्रत्यय के अभाव में और खञ् प्रत्यय होने पर आयनेयादि सूत्र से ईन आदेश होने पर युष्मद् ईन इस स्थिति में तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ इस सूत्र से युष्मद् इसके स्थान पर युष्माक यह आदेश होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदिवृद्धि होकर यौष्माक ईन यह हुआ। तत्पश्चात् भसंज्ञक अकार का लोप होने पर अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से नकार को णकार होकर स्वादिकार्य होने पर यौष्माकीणः यह रूप सिद्ध होता है।

पुनः खञ् प्रत्यय का अभाव होने पर शेषे इस त के योग से अण् प्रत्यय होकर युष्मद् अ इस स्थिति में तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ इस शास्त्र से युष्मद् इसके स्थान पर युष्माक यह आदेश, आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप, स्वादिकार्य होने पर यौष्माकः यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार हम यहाँ तीन रूप प्राप्त करते हैं-

1. युष्मदीयः।
2. यौष्माकीणः।
3. यौष्माकः।

इस प्रकार ही आवयोः अयम् अथवा अस्माकम् अयम् इस अर्थ में छ प्रत्यय होने पर अस्मदीयः यह रूप, खञ् प्रत्यय होने पर अस्मद् इसके स्थान पर अस्माक यह आदेश होने पर आदिवृद्धि करने पर आस्माकीनः यह रूप, छ-खञ्प्रत्यय से अतिरिक्त स्थल में अण् होने, अस्माक आदेश होने पर आस्माकः यह रूप। इस तरह तीन रूप सिद्ध होते हैं।

अभी अण् और खञ् परे रहते एकत्व विशिष्ट अस्मद् और युष्मद् शब्द के स्थान पर आदेश विधान करने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं -

30.13 तवकममकावेकवचने॥ (४.३.६२)

सूत्रार्थ - एकार्थ वाचक युष्मद् और अस्मद् शब्द को क्रमशः तवक और ममक आदेश हो, खञ् और अण् परे रहते।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र दो पदों का है। तवकममकौ एकवचने यह सूत्रगत पदच्छेद है। तवकममकौ यह प्रथमा द्विवचनान्त है। एकवचने यह प्रथमा एकवचनान्त है। तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ इस सूत्र से अणि, तस्मिन् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। तस्मिन् इससे युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च इस पूर्वसूत्र से खञ् इसका परामर्श होता है। युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च यहाँ से युष्मदस्मदोः की अनुवृत्ति भी होती है। एकस्य वचनम् (उक्तिः) यह षष्ठीतत्पुरुषे एकवचनम्, तस्मिन् एकवचने। तवकश्च ममकश्च तवकममकौ इति इतरेतरयोद्वन्द्वः। एवञ्च तस्मिन् अर्थात् खञ्प्रत्यये परे तथा अण्प्रत्यये परे एकत्वसंख्याकथने प्रयुक्तयोः युष्मद्-अस्मद्-शब्दयोः स्थाने यथासंख्यं तवक-ममक-आदेशौ भवतः इति सूत्रार्थः।

विशेष - तवक और ममक आदेश अनेकाल् होता है। अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से वे दोनों सर्वादेश होते हैं।

टिप्पणियाँ

उदाहरण – खञ् परे रहते उदाहरण – तव अयम् इति तावकीन:। युष्मद् ङस् यह अलौकिक विग्रह करने पर युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च इस सूत्र से तस्येदम् इस शैषिकार्थ में खञ्, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, प्रकृतसूत्र से युष्मद् शब्द के स्थान पर तवक यह सर्वादेश होने पर तवक ख यह हुआ। तत्पश्चात् आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से ख के स्थान पर ईन आदेशे, आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप और स्वादिकार्य होने पर तावकीन: यह रूप सिद्ध होता है।

खञ् अभावपक्ष में तो शेषे इससे अण् होने पर तवकममकावेकवचने इस सूत्र से तवक आदेश होने पर आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप और स्वादिकार्य होने पर तावक: यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार से ही मम अयम् इस विग्रह में मामकीन:, मामक: इत्यत्र प्रक्रिया ज्ञेय।

एकार्थवाचक युष्मद् शब्द से और एकार्थवाचक से अस्मद् शब्द से तवकममकावेकवचने इस प्रकृतसूत्र से पक्ष में छ प्रत्यय, छ के स्थान पर ईय आदेश होकर युष्मद् ईय इस स्थति में यह सूत्र आरभ्भ करते हैं।

30.14 प्रत्ययोत्तरपदयोश्च॥ (७.२.९८)

सूत्रार्थ – एकार्थ के वाचक युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग को त्व और म आदेश हो प्रत्यय और उत्तरपद परे रहते।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में दो पद हैं। प्रत्ययोत्तरपदयो: च यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। प्रत्ययश्च उत्तरपदं च तयो: इतरेतरयोगद्वन्द्वे प्रत्ययोत्तरपदे, तयो: प्रत्ययोत्तरपदयो: यह सप्तमी द्विवचनान्त है। च यह अव्यय है। इस सूत्र में त्वमावेकवचने यहाँ से त्वमौ एकवचने इन दोनों की और युष्मदस्मदोरनादेशे यहाँ से युष्मदस्मदो: इसकी अनुवृत्ति होती है। मपर्यन्तस्य यह धिक्रियते। समास का चर अर्थात् अन्तिम पद उत्तरपद कहा जाता है। इस प्रकार सूत्रार्थ – एकवचन विषयक युष्मद् और अस्मद् शब्द से मपर्यन्त के स्थान पर त्व और म आदेश होता है, प्रत्यय अथवा उत्तरपद परे रहते। यथासंख्यमनुदेश: समानाम् इस परिभाषा के योग से युष्मद् शब्द के मपर्यन्त के स्थान पर अर्थात् युष्म् इ स्थाने त्व यह आदेश होता है, अस्मद् शब्द के मपर्यन्त के स्थान पर अर्थात् अस्म इस के स्थान पर म यह आदेश होता है, यह सूत्र का तात्पर्य है।

उदाहरण – त्वदीय:, युष्मदीय:। उत्तरपद रहने पर त तो त्वत्पुत्र:, मत्पुत्र:।

सूत्रार्थसमन्वय – तव अयम् यह लौकिक विग्रह होने पर युष्मद् ङस् इस अलौकिक विग्रह में युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च इस सूत्र से पाक्षिक छ प्रत्यय होने पर छ के स्थान पर ईय आदेश। तत्पश्चात् प्रत्यय पर है इस कारण से प्रत्ययोत्तरपदयोश्च इस सूत्र से युष्मद् शब्द के मपर्यन्त के स्थान पर अर्थात् युष्म् यहाँ त्व आदेश होने पर त्व अद् ईय यह हुआ। तत्पश्चात् अतो गुणे इससे पररूप एकादेश होने पर, वर्णसम्मेलन और स्वादिकार्य होने पर त्वदीय: यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही मम अयम् यह विग्रह होने पर मदीय: यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही तव

अयम् यह विग्रह होने पर युष्मदीयः, यौष्माकीणः, यौष्माकः, तावकीनः, तावकः, त्वदीयः ये छः रूप होते हैं। मम अयम् इस विग्रह में भी छः रूप होते हैं।और वे हैं- अस्मदीयः, आस्माकीनः, आस्माकः, मामकीनः, मामकः, मदीयः।

इस विषय में तालिका को देखो-

खञ् प्रत्यय होने पर	अण् प्रत्यय होने पर	छप्रत्यये
एकवचन में-	**एकवचन में-**	**एकवचन में-**
तवायं तावकीनः।	तवायं तावकः।	तवायं त्वदीयः।
ममायं मामकीनः।	ममायं मामकः।	ममायं मदीयः।
द्विवचन में-	**द्विवचन में-**	**द्विवचन में-**
युवयोरयम् यौष्माकीणः।	युवयोरयम् यौष्माकः।	युवयोरयम् युष्मदीयः।
आवयोरयम् आस्माकीनः।	आवयोरयम् आस्माकः।	आवयोरयम् अस्मदीयः।
बहुवचन में-	**बहुवचन में-**	**बहुवचन में-**
युष्माकमयं यौष्माकीणः।	युष्माकमयं यौष्माकः।	युष्माकमयं युष्मदीयः।
अस्माकमयम् आस्माकीनः।	अस्माकमयम् आस्माकः।	अस्माकमयम् अस्मदीयः।

तव पुत्रः इस अर्थ में युष्मद् ङस् पुत्र सु यह अलौकिक विग्रह होने पर षष्ठी इस सूत्र से तत्पुरुष समास में कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से सुप् का लोप होने पर युष्मद् पुत्र यह होता है। तत्पश्चात् पुत्र शब्द उत्तरपद है इस कारण से प्रत्ययोत्तरपदयोश्च इस प्रकृत सूत्र से युष्म् इसके स्थान पर त्व आदेश होने पर त्व अद् इस स्थिति में अतो गुणे इससे पररूप एकादेश होने पर दकार का खरि च इस सूत्र से चर्त्व होकर स्वादिकार्य होने पर त्वत्पुत्रः यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही मम पुत्रः इस अर्थ में मत्पुत्रः यह रूप होता है।

30.15 ग्रामाद्यखञौ॥ (४.२.९४)

सूत्रार्थ - ग्राम शब्द से शेष अर्थ में तद्धित प्रत्यय य और खञ् होते है।

सूत्रव्याख्या - ग्रामात् (५/१), घखौ (१/२) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा इति एते अधिक्रियन्ते। इस प्रकार समर्थ ग्राम प्रातिपदिक से शैषिक अर्थ में तद्धितसंज्ञक य और खञ् प्रत्यय पर होते हैं यह सूत्रार्थ है। खञ् का ञकार इत्संज्ञक है। उसका खमात्र शेष रहता है।

उदाहरण- ग्राम्यः, ग्रामीणः।

टिप्पणियाँ

सूत्रार्थ समन्वय – ग्रामे जातो भवो वा यह लौकिक विग्रह होने पर ग्राम ङि यह अलौकिक विग्रह होने पर प्रकृत सूत्र से य प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुप् का लोप होने पर ग्राम य यह होता है। तत्पश्चात् भसंज्ञा, अकार लोप और स्वादिकार्य होने पर ग्राम्यम् यह रूप होता है।

खञ् प्रत्यय होने पर तो अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर ग्राम ख यह होता है, आयनेयादि सूत्र से खकार के स्थान पर ईन आदेश होने, भसंज्ञादि कार्य होने पर ग्रामीणः यह रूप भी होता है, इस तरह रूपद्वय सिद्ध होते हैं।

30.16 आत्मन्विश्वजन भोगोत्तरपदात्खः॥ (५.१.९)

सूत्रार्थ– आत्मन् शब्द, विश्वजन शब्द और भोगोत्तरपद शब्द से हितार्थ में ख प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में दो पद है। आत्मन्विश्वजन भोगोत्तरपदात् खः यह सूत्रगत पदच्छेद है। विश्वे जनाः विश्वजनाः (कर्मधारय समास), भोगः उत्तरपदं यस्य स भोगोत्तरपदः। आत्मा च विश्वजनाश्च भोगोत्तरपदञ्च तेषां समाहारद्वन्द्वः- आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदम्, तस्मात्। आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात् इति पञ्चम्येकवचनान्तम्। खः यह प्रथमा एकवचनान्त है, तस्मै हितम् इसकी अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, इति एते अधिक्रियन्ते। एवञ्च तस्मै=चतुर्थ्यन्तात् आत्मन्-विश्वजन-भोगोत्तरपदप्रातिपदिकात् हितम् इत्यर्थे तद्धितसंज्ञकः खप्रत्ययो भवति इति सूत्रार्थः। यह सूत्र औत्सर्गिक छप्रत्यय का अपवाद भूत है।

उदाहरण – आत्मनीनम्, विश्वजनीनम्, मातृभोगीणः।

सूत्रार्थसमन्वय – इस प्रकार आत्मने हितम् इस अर्थ में आत्मन् ङे इस चतुर्थ्यन्त प्रातिपदिक से प्रकृत सूत्र से ख प्रत्यय, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर आत्मन् ख यह होता है। तत्पश्चात् खकार के स्थान पर ईन आदेश होने पर आत्मन् ईन् इस स्थिति में नस्तद्धिते इस सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप प्राप्त होने पर आत्माध्वानौ खे इस सूत्र से प्रकृतिभाव होने पर लोप नहीं होता है। तत्पश्चात् स्वादिकार्य होने पर आत्मनीनम् यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार ही विश्वजनीनम् यह रूप रूपं सिद्ध होता है।

मातृभोगाय हितम् यहाँ तो मातृ शब्द से परे भो शब्द है। अतः मातृभोग शब्द भोगोत्तर शब्द है। उस कारण ही मातृभोग ङे इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से ख प्रत्यय, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, खकार के स्थान पर ईन आदेश, भसंज्ञक अकार का लोप, नकार का णत्व और स्वादिकार्य होने पर मातृभोगीणः यह रूप सिद्ध होता है।

30.17 सायञ्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च॥ (४.३.२३)

सूत्रार्थः – सायम् इत्यादि चारों अव्ययों और कालवाचक अव्ययों से ट्यु और ट्युल होते हैं, और उनको तुट् आगम हो।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में चार पद हैं। सायञ्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यः (५/३), ट्युट्युलौ (१/२) तुट् (१/१) च यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। सायञ्च चिरञ्च प्राह्णे च प्रगे च अव्ययञ्च इनका इतरेतरयोगद्वन्द्व होने पर सायञ्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययानि, तेभ्यः सायञ्चिरम्प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यः। ट्युश्च ट्युल् च इनका इतरेतरयोगद्वन्द्व होने पर ट्युट्युलौ। तुट् यह प्रथमा एकवचनान्त है। च यह अव्यय है। इस सूत्र में कालाट्ठञ् यहाँ से वचन विपरिणाम से कालेभ्यः इसकी अनुवृत्ति होती है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, शेषे इति एते अधिक्रियन्ते। एवञ्च सूत्रार्थस्तावत् – सायम्, चिरम्, प्राह्णे और प्रगे इन कालवाचक शब्दों से तथा कालवाचक अव्ययों से तद्धितसंज्ञक ट्य और ट्युल प्रत्यय होते हैं, उन प्रत्ययों को तु ट् आगम भी होता है। यहाँ सायम्, चिरम्, प्राह्णे, प्रगे ये सब अव्यय नहीं है, अन्यथा अव्ययत्व होने से ही सिद्ध होने पर पुनः पृथक् उल्लेख व्यर्थ होता। उन दोनों प्रत्ययों का टकार और लकार इत्संज्ञक हैं। अतः यु यह शेष रहता है, अतः दोनों प्रत्ययों की समान रूपता दिखाई देती है, फिर भी स्वर में भेद है यह ध्यान योग्य है। तुडागम में उकार और टकार इत्संज्ञक हैं, त्– यह ही शेष रहता है। यु इसके स्थान पर युवोरनाकौ इस सूत्र से अन–यह आदेश होता है। टित्करण का प्रयोजन –स्त्रीत्व विवक्षा में टिड्ढाणञ् इत्यादि सूत्र से ङीप्प्रसक्ति। तेन सायन्तनं कृत्यम्, सायन्तनी वेला। यहाँ ध्यान देना चाहिए – प्रकृत सूत्र से सायम् और चिर शब्द का मान्तत्व है किन्तु प्राह्णे और प्रगे शब्द का एदन्तत्व निपात होता है।

उदाहरणम– सायन्तम्। चिरन्तनम्। प्राह्णेतनम्। प्रगेतनम्।

सूत्रार्थसमन्वय – साये भवः इस अर्थ में सप्तम्यन्त घञन्त सायशब्द से तत्र भवः इस शैषिक अर्थ में प्रकृत सूत्र से ट्यु प्रत्यय होने पर अथवा ट्युल् प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, यु इसके स्थान पर अन आदेश, तुडागम, सायशब्द का मान्तत्व निपातन होने पर स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पद संज्ञा होने पर मकार का अनुस्वार, अनुस्वार का विकल्प से परसवर्ण होने और स्वादिकार्य होने पर सायन्तनः, सायंतनः इति रूपद्वय सिद्ध होते हैं।

चिरे भवः इस अर्थ में चिरन्तनम्। इस अर्थ में ही तो चिरपरुत्परारिभ्यस्त्नो वक्तव्यः इस वार्तिक से त्न प्रत्यय होने और स्वादिकार्य होने पर चिरत्नम् यह रूप होता है।

प्राह्णे भवो जातो वा इस अर्थ में प्राह्णेतनम् यह रूप होता है।

प्रगे भवो जातो वा इस अर्थ में प्रगेतनः यह रूप है। प्रगेतनो विहारः (Morning walk) यह प्रयोग है।

कालवाचक का उदाहरण

दोषा भवं दोषातनम्। यहाँ रात्रिवाचक दोषा शब्द से तत्र भवः इस शैषिक अर्थ में प्रकृत सूत्र से ट्यु प्रत्यय अथवा ट्युल् प्रत्यय होने पर दोषातनम् यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

इस प्रकार ही-

1. दिवा भवं दिवातनम् (दिन में होने वाला)।
2. श्वो भवं श्वस्तनम् (आगामी कल में होने वाला)।
3. ह्यो भवं ह्यस्तनम् (गतकल में होने वाला)।
4. अद्यो भवम् अद्यतनम् (आज होने वाला)।
5. पुरा भवं पुरातनम् (पूर्वकाल में होने वाला)।
6. सदा भवः सदातनः (हमेशा होने वाला)।
7. सना भवः सनातनः (सदा होने वाला)।
8. अधुना भवः अधुनातनः (अब होने वाला)।
9. इदानीं भवः इदानीन्तनः (अब होने वाला)।
10. प्राग्भवः प्राक्तनः (पहले होने वाला)।
11. प्रातर्भवः प्रातस्तनः (प्रातः होने वाला)।
12. ऐषमो भवम् ऐषमस्तनम् (इस वर्ष होने वाला)।

30.18 जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः॥ (४.३.६२)

सूत्रार्थ - जिह्वामूल शब्द और अङ्गुल शब्द से तत्र भवः इस अर्थ में छ प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। जिह्वाया मूलं जिह्वामूलम्, जिह्वामूलञ्च अङ्गुलिश्च तयोः समाहारद्वन्द्वो जिह्वामूलाङ्गुलिः, सौत्रं पुंस्त्वं तस्माद् जिह्वामूलाङ्गुलेः यह पञ्चमी एकवचनान्त है। छः यह प्रथमा एकवचनान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, शेषे इति एते अधिक्रियन्ते। इस प्रकार पूर्वोक्त अर्थ सिद्ध होता है। जिह्वामूलम् और अङ्गुलिः ये दोनों शब्द अवयव वाचक हैं इस कारण से शरीरावयवाच्च इस सूत्र से यत् प्रत्यय प्राप्त होने पर, उसको बांधकर छ प्रत्यय होता है।

उदाहरणम् - जिह्वामूले भवम् यह लौकिक विग्रह होने पर जिह्वामूल ङि इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से छ प्रत्यय होने पर आयनेयादि सूत्र से ईयादेश, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक, भसंज्ञा, अकारलोप, स्वादिकार्य होने पर जिह्वामूलीयम् यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार पूर्वप्रक्रिया के अनुसार ही अङ्गुलीयम् यह रूप सिद्ध होता है।

30.19 गोश्च पुरीषे॥ (४.३.१४५)

सूत्रार्थ - पुरीष अर्थ में अर्थात् मल अर्थ में गो प्रातिपदिक से मयट् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। यह सूत्र तीन पदों वाला है। गोः पञ्चमी एकवचनान्त और च यह अव्ययपद है, पुरीषे यह सप्तमी एकवचनान्त है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, शेषे इति एते अधिक्रियन्ते। तस्य विकार यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। मयड् वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः यहाँ से मयट् अनुवर्तित होता है। इस प्रकार उक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है। यह सूत्र गोपयसोर्यत् इस सूत्र का बांधक है। यद्यपि गो का मल गो का अवयव नहीं है, अथवा न ही उसका विकार फिर भी सम्बन्ध सामान्य को लेकर ऐसा कहा गया है।

उदाहरणम् – गोः पुरीषं गोमयम्। गोः विकारः यह लौकिक विग्रह होने पर गो ङस् इस अलौकिक विग्रह में प्रकृतसूत्र से मयट्प्रत्यय, अनुबन्धलोप होने पर गो मय इस स्थिति में प्रातिपदिकसंज्ञादि कार्य होने पर गोमयम् यह रूप सिद्ध होता है।

30.20 रक्षति (४.४.३३)॥

सूत्रार्थ – रक्षति इस अर्थ में द्वितीयान्त समर्थ प्रातिपदिक से तद्धित औत्सर्गिक ठक् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। एक पद वाला सूत्र है। रक्षति यह अर्थबोधक क्रियापद है। तत् प्रत्यनुपूर्वमीपलोमकूलम् यहाँ से तत् इस द्वितीयान्त पद की अनुवृत्ति होती है। प्राग्वहतेष्ठक् यहाँ से ठक् प्रत्यय अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा, इति एते अधिक्रियन्ते। उससे पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरणम् – समाजं रक्षति इति सामाजिकः। समाजं रक्षति यह लौकिक विग्रह होने पर समाज अम् इस अलौकिक विग्रह में रक्षति इस सूत्र से ठक्प्रत्यय, अनुबन्धलोप होने पर ठस्येकः इस सूत्र से ठ के स्थान पर इक यह आदेश होने पर समाज इक इस स्थिति में ठक् के कित्त्व होने से किति च इस सूत्र से आदिवृद्धि, भसंज्ञक अकार का लोप होने पर और स्वादिकार्य होने पर सामाजिकः यह रूप सिद्ध होता है।

30.21 नौवयो धर्मविषमूल मूलसीतातुलाभ्यस्तार्य तुल्यप्राप्यवध्यानाम्य समसमित सम्मितेषु॥ (४.४.९१)

सूत्रार्थः – नौ, वयस्, धर्म, विष, मूल, मूल, सीता, तुला इन शब्दों से पर क्रमशः योग्य, तुल्य, प्राप्य, वध्य, प्राप्यलाभ, सम, एकीकरण, तोलन अर्थों में म यत् प्रत्ययो होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधि सूत्र है। यह दो पदों वाला सूत्र है। नौश्च वयश्च धर्मश्च विषञ्च मूलञ्च मूलञ्च सीता च तुला च इनका इतरेतरयोगद्वन्द्व है– नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलास्ताभ्यः नौवयोधर्म विषमूलमूलसीतातुलाभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त है। तार्यञ्च तुल्यञ्च प्राप्यञ्च वध्यञ्च आनाम्यञ्च समश्च समितञ्च सम्मितञ्च इनका इतरेतरयोगद्वन्द्व है– तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्य समसमितसम्मितानि तेषु तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु यह सप्तमी बहुवचनान्त है।

प्राग्घिताद्यत् यहाँ से यत् अनुवर्तित होता है। प्रत्ययः, परश्च, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समर्थानां प्रथमाद्वा ये अधिकार सूत्र करते हैं। इस प्रकार पूर्वोक्त सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण – अभी क्रमशः उदाहरण आलोचित किए जाते हैं–

1. **नाव्यम्**– नावा तार्यम् यह लौकिक विग्रह होने पर नौ टा इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से तार्य अर्थ में यत् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, प्रातिपदिकसंज्ञा, सुब्लुक होने पर नौ य इस स्थिति में वान्तो यि प्रत्यये इस सूत्र से आव् आदेश होकर विभक्त्यादिकार्य होने पर नाव्यम् यह रूप सिद्ध होता है।

2. **वयस्यः**– वयसा तुल्यम् इस अर्थ में वयस् टा यह अलौकिक विग्रह होने पर प्रकृत सूत्र से यत् प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकसंज्ञादि कार्य होने पर वयस्यः यह रूप सिद्ध होता है।

3. **धर्म्यम्** – धर्मेण प्राप्यम् धर्म्यम् (धर्म से प्राप्त करने योग्य)।

4. **विष्यः** – विषेण वध्यः (विष से मारने योग्य)।

5. **मूल्यम्** – मूलेन (पूँजी) आनाम्यम् (मूल से लाने योग्य)।

6. **मूल्यः** – मूलेन समः मूल्यः(मूल के समान)।

7. **सीत्यम्** – सीतया समितं सीत्यम् (सीता के समान)।

8. **तुल्यम्** – तुलया सम्मितं तुल्यम् (तुला के समान)

इस प्रकार इस सूत्र के आठ उदाहरण प्रदर्शित किये गए हैं।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. नौवयोधर्मादि सूत्र को पूरा कीजिए।
2. सामाजिकः शब्द का क्या अर्थ है?
3. गोः पुरीषम् इस अर्थ में क्या रूप होता है?
4. जिह्वामूलीयम् यहाँ कौन सा प्रत्यय है और किस सूत्र से होता है?
5. युवयोः युष्माकं वा अयम् इस अर्थ में कितने रूप होते हैं और वे कौन से हैं?
6. वृद्धसंज्ञा किससे होती है?
7. वृद्धसंज्ञा का एक फल लिखिए।
8. शालीयः यहाँ कौन सा तद्धित प्रत्यय है?

पाठ का सार

तद्धित प्रकरण के इस तृतीय पाठ में अण्, तल्, वुन्, घः, खः, छः, खञ्, मयट्, यत् इत्यादि तद्धित प्रत्यय आलोचित किए गए हैं। इनमें कदाचित् एक ही प्रत्यय भिन्न अर्थों में होता है जैसे अण् प्रत्यय कभी तेन युक्तम् इस अर्थ में, और कभी तेन दृष्टम् इस अर्थ में अथवा कभी प्रकृतिप्रत्यय से देश के नाम में गम्यमान होने पर होता है। किन्तु कहीं तद्धित पद के लुप्तस्थल पर प्रकृतिवद् वचन किया जाता है, जैसे लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने यह अतिदेशसूत्र भी आलोचित किया गया है। ऊपर सभी लोकव्यवहार उपयोगी शब्द आलोचित किए गए हैं, उनको आप व्यवहार में प्रयोग कर सकते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. नौवयोधर्मादि सूत्र को पूरा करके व्याख्या कीजिए।
2. जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
3. युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च इस सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
4. युवयोः युष्माकं वा अयम् इस अर्थ में तद्धित प्रत्यय प्रयोग होने पर कितने रूप होते हैं, और उनको प्रक्रिया सहित निरूपण कीजिए।
5. लुपि युक्तवद्व्यक्तिवचने इस अतिदेशसूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
6. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
7. क्रमादिभ्यो वुन् सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
8. तदधीते तद्वेद सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
9. ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल् सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1

1. रज्यते अनेन इस अर्थ में तृतीयान्त रङ्गवाचक समर्थ प्रातिपदिक से अण्प्रत्यय होता है।
2. अण्।
3. वसिष्ठेन दृष्टम्।
4. अण्।

टिप्पणियाँ

5. तल्।
6. जनानां समूह:।
7. सास्य देवता।

30.2

1. घप्रत्यय।
2. व्याकरणम् अधीते वेद वा।
3. अतिदेश सूत्र।
4. शिक्षाम् अधीते शिक्षां वेद वा।
5. मीमांसाम् अधीते मीमांसां वेद वा।
6. अण्।
7. वङ्गानां निवासो जनपद: वङ्गा:।

30.3

1. नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसम्मितेषु।
2. रूपत्रय। युष्मदीय:, यौष्माकीन:, यौष्माक:।
3. वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् इससे।
4. समाजं रक्षति।
5. गोमयम्।
6. छप्रत्यय:, जिह्वामूलाङ्गुलेश्छ: इसके योग से।
7. वृद्धाच्छ: इससे छप्रत्यय का विधान।
8. छप्रत्यय का विधान होता है।

॥ तीसवां पाठ समाप्त॥